कार्यक्रम रिपोर्ट

इस वर्ष समूचा राष्ट्र आज़ादी के 75वें वर्ष को 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के रूप में बना रहा है। इसी अमृत महोत्सव में देश के सभी विश्वविद्यालय एवं केन्द्रीय विश्वविद्यालय अपनी – अपनी भूमिका निभा रहे हैं, अमृत महोत्सव के क्रम में हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय की स्पर्श समिति के द्वारा आज (11-08-2022) "आज़ादी के 75 वर्ष बाद भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति" विषय को लेकर संगोष्ठी आयोजित की गई थी। जिसमे स्त्रियों की आज़ादी के 75 वर्षों बाद भारतीय समाज के विकास में स्त्रियों की भूमिकाएं तथा योगदान के साथ – साथ उनके बदलते स्वरूप पर विचार विमर्श किया गया। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय की स्पर्श समिति की अध्यक्ष डॉ. गीतांजली उपाध्याय द्वारा स्वागत वक्तव्य दिया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलसचिव महोदय एवं अधिष्ठाता शिक्षा संकाय प्रो. विशाल सूद द्वारा किया गया। प्रो. विशाल सूद ने संगोष्ठी विषय पर मत देते हुए कहा कि भारत में स्त्रियाँ सदैव पूजनीय रही है। वर्तमान समय में स्त्रियाँ कंधो से कंधो मिलाकर बराबरी कर रही है। साथ ही उन्होंने स्त्रियों को केंद्र में रखकर चल रही सरकारी योजनाओं की तरफ भी सभी का ध्यान केन्द्रित करते हुए उसके बारे में विस्तृत जानकारी दी। इसके पश्चात धौलाधार परिसर I के निर्देशक प्रो. मनोज सक्सेना ने संगोष्ठी विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि वर्तमान समय में स्त्रियों को निर्णय लेने की क्षमता के प्रति और सशक्त होने की जरूरत है। साथ ही उन्होंने बताया कि विवेकानंद जी का मानना था कि किसी भी समाज को या राष्ट्र को समझना हो तो वहां के समाज में स्त्रियों की स्थिति से समझा जा सकता है। कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए इनके पश्चात भाषा संकाय के अधिष्ठाता डॉ. बृहस्पति मिश्र ने भारतीय समाज में स्त्रियों के बदलते स्वरुप तथा उनके क्रमिक विकास पर प्रकाश डाला। सहायक आचार्य राजनीति विज्ञान एवं स्पर्श समिति की सम्मानित सदस्य ज्योति परासर ने आज़ादी के आंदोलन में महिलाओं की भूमिकाओं तथा राष्ट्र निर्माण में उनके योगदान पर विचार विमर्श किया। इसी श्रृंखला की अगली कड़ी में हिंदी विभाग के प्रभारी डॉ. चंद्रकांत द्वारा संगोष्ठी विषय पर विचार रखते हुए कहा कि स्त्रियों का अधिकार पुरषों पर न हो बल्कि स्वयं पर हो साथ ही महिलाओं को केंद्र में रखकर चल रही

सरकारी योजनाओं से सभी को अवगत करवाया। साहित्य में महिला लेखिकाओ ने किस प्रकार लेखनी के माध्यम से अपना योगदान निभाया है उसपर भी उन्होंनेअपने विचार व्यक्त किये।

इसके पश्चात हिंदी विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. प्रिय शर्मा ने संगोष्ठी विषय को सार्थक करती कविता का पाठ किया और साथ सभी को यह संदेश दिया कि लड़कियों को अपना संघर्ष स्वयं ही लड़ना पड़ेगा उसके लिए लिए किसी दूसरे पर निर्भर रहने की जरूरत नहीं है। कार्यक्रम का अंत धन्यवाद ज्ञापन के साथ विश्वविद्यालय शिकायत समिति की अध्यक्ष एवं हिंदी विभाग की सहायक आचार्य डॉ. प्रीति सिंह ने किया तथा सम्पूर्ण कार्यक्रम का सफल संचालन हिंदी विभाग की शोधार्थी नेहा झा द्वारा निर्वहन किया गया।